पाँचवाँ अध्याय

उपसंहार

1. प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **सत्तरोत्तर हिन्दी कहानी में नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति** से संबन्धित है।इस शोध प्रबन्ध में सन् **1970** से सन् **2008** के बीच विरचित हिन्दी की प्रमुख कहानियों में अभिव्यक्त नारी अस्मिता का अध्ययन किया गया है।

2. इस शोध प्रबन्ध में जिन कहानिकारों की कहानियों का अध्ययन किया गया है उनमें प्रमुख हैं -अमरकांत, इब्राहीम शरीफ, उषा प्रियंवदा, कमलेश्वर, कामिनी बाली, कान्ता सिन्हा, कुसुम अंसल, कृष्णा अग्निहोत्री, कैलाश बनवासी, गिरिराज किशोर, चित्रा मुद्गल, दीप्ती खण्डेलवाल, नासिरा शर्मा, प्रीतम अरोडा, मणिका मोहिनी, मन्नु भण्डारी, ममता कालिया, महीप सिंह, मार्कण्डेय, मालती जोशी, मेहरून्निसा परवेज, मृदुला गर्ग, मृणाल पाण्डेय, मंजुल भगत, रवीन्द्र कालिया, राजी सेठ, रमेश बक्षी, विजय चौहान, शशिप्रभा शास्त्री, शैलेश मटियानी, सविता चड़ढ़ा, सिम्मी हर्षिता, सूर्यबाला आदि।

3 प्रस्तुत कहानीकारों की इस कालावधि में लिखी गयी उन सौ कहानियों को ही अध्ययन में सम्मिलित किया गया है जो किसी न किसी रूप में नारी अस्मिता की अभ्व्यक्ति करती हैं। इन कहानिकारों की इस कोटि की उन कहानियों को अध्ययन में सम्मिलित नहीं किया गया है जो इस कालावधि की नहीं हैं ।

4 यह शोध प्रबन्ध पॉच अध्यायों में रूपायित है।प्रथम अध्याय में विभिन्न युगों में भारतीय नारी जागरण का संक्षिप्त अध्ययन हुआ है।दूसरे अध्याय में कहानिकारों का उल्लेख किया गया है ।तीसरे अध्याय में विभिन्न नारी समस्याओं का आकलन है।चौथे अध्याय में नारी अस्मिता की अभिव्यक्ति करनेवाली कहानियों का विश्लेषण किया गया है और पााचवॉ अध्याय उपसंहार है।

5 भारतीय समाज में लड़की का जन्म ही अशुभ माना जाता था और वह परिवार के लिए बोझ मानी जाती थी।कहानीकारों ने पीड़ित और व्यथित आत्मा को अपने आत्मिक अनुभव और दर्द भरे बिंबों से अभिव्यक्त किया है।

6 शोध प्रबन्ध में प्रस्तुत कहानियों के नारी पात्रों में स्वतंत्र जीवन जीने की कुलबुलाहट देखी जा सकती है। यहाँ स्वतंत्रता का अर्थ केवल यौन स्वच्छन्दता नहीं है। स्वतंत्र जीवन जीने का उनका निर्णय सुविचारित, उददेश्यपरक और महत्वपूर्ण है। पति की सामंती मानसिकता से छुटकारा पाने की उत्कट इच्छा की परिणति माना जा सकता है। पुरूष प्रधान समाज में नारी कभी-कभी विद्रोही रूप धारण करती है।

7 आज की नारी पुरूष के अत्याचार को चुपचाप सहते रहने की बजाय इसका सुनियोजित ढ़ंग से विरोधकरती है और अपनी अस्मिता की तलाश कर स्वाभिमान पूर्ण जीवन जीने लगती है।

8 उत्तराधुनिक युग में स्त्री-पुरूष संबधी विषयक समस्त आदर्श एवं मान्यताएँ बदल रही हैं। आज नारी घुट-घुटकर जीना पसंद नहीं करती है। पुराने नैतिक बोध को वह सहज ही अस्वीकार कर देती है। आज वह अपने अधिकारों के प्रति सचेत है। स्वतंत्र जीवन जीने की प्रबल इच्छा उसमें दीख पड़ती है। इसके अलावा वह मर्दों के कंधे से कंधे मिलाकर जीना भी चाहती है।

9 आज की नारी समझती है कि वह न पुरूष की जूती है और न दासी। वह पुरूष का समतुल्य स्थान मात्र चाहती है।

10 स्त्री का चेहरा बदल रही है। सभी हीन कार्यों को नियति मानकर सहने केलिए वह तैयार नहीं है। भाग्य को कोसते हुए ऑसु बहाना अब उसका कार्य नहीं है।

11 पुरूष समाज के अत्याचारों के विरूद्ध उंगली उठाकर प्रश्न करने केलिए आधुनिक नारी तैयार हो जाती है। शिक्षा का प्रचार, आर्थिक स्वावलंबन आदि नारी को इसकेलिए आवश्यक धैर्य प्रदान करते हैं।

12 भारतीय परिकल्पना के अनुसार दस शिक्षकों से श्रेष्ठ आचार्य, सौ आचार्यें से श्रेष्ठ पिता और हजार पिता से अधिक श्रेष्ठ वन्दनीय और आदरणीय माता है। नारी का यह सनातन मातृत्व ही उसका स्वरूप है। वह मानवता की नित्यमाता है।

13 नर और नारी का शारीरिक और मानसिक संगठन एक सा नहीं है। अतएव दोनों की स्वतंत्रता का क्षेत्र, कर्म और मार्ग भी भिन्न-भिन्न है। दोनों अपने-अपने मार्ग से चलकर ही सही अर्थों में स्वतंत्रता प्राप्त कर सकते हैं।

14 सदियों से सामाजिक शोषण और उत्पीड़न से त्रस्त रही स्त्री दुनियाभर में अपने अधिकारों के लिए समय-समय पर संघर्ष करती रही है। समाज और साहित्य में जागरूक होती स्त्री ने आज बहूत हद तक अपने अधिकारों को हासिल भी किया है और अब भी उसकी लड़ाई जारी है अनवरत।

15 सत्तरोत्तर कहानी साहित्य में नारी के जीवन में आये अनेक मोडों को कहानीकारों ने यथार्थ पहलुओं से जोडकर प्रस्तुत किया है। अस्तित्व की स्थापना केलिए संघर्षरत नारी, जीवन में विभिन्न भूमिकाओं को निभा रही है। कामकाजी नारी को दोहरा दायित्व निभाना पड़ता है। परंपरागत भाभीवादी, दादीवादी विकृत परंपरा से वह मुक्त है क्योंकि वह सहानुभूति की नहीं संघर्ष की नयी भूमिका चाहती है। अत: कहानीकारों ने नारी को उस इकाई के रूप में प्रस्तुत किया है जिसे जीवन के अनेक नये संदर्भों एवं नयी दिशाओं से गुज़रना पड़ रहा है। नारी को अनेकों मील और सफर करना है।

सदियों से पददलित एवं शोषित भारतीय नारी आज अपनी अस्मिता एवं आत्मगौरव को पहचान रही है। नारी के इस नवजागरण के पीछे कई कारण होते हैं। नारी शिक्षा का प्रचार, समाज सुधारकों के परिश्रम, आर्थिक स्वावलंबन आदि उनमें प्रमुख हैं। लेकिन शायद उन सबसे अधिक प्रमुख कारण साहित्य है। हिन्दी के प्रबुद्ध कहानीकारों ने नारी की अस्मिता को केन्द्र में रखते हुए अनेक कहानियों की रचना कर नारी-जागरण को पृष्ट किया। सामान्य जनता को नारी की अस्मिता की महत्ता एवं आवश्यकता समझाने में कहानियों ने उल्लेखनीय भूमिका निभायी। यह सर्वविदित है कि कहानियों का अध्ययन करनेवाली सामान्य जनता उनके संदेश को बहूत कुछ अपनाती है।

यह निर्विवाद है कि साहित्य का समाज पर बेहद प्रभाव पड़ता है। मानव मन को प्रभावित करने में साहित्य की क्षमता अत्यधिक है। मिसाल के तौर पर, बिहारी के एकमात्र दोहे से लंपट राजा जयसिंह की मन:स्थिति में आमूल परिवर्तन हुआ। उसी प्रकार वर्तमान समाज में भी नारी के प्रति आदर और सम्मान की भावना जगाकर नारी अस्मिता को दृढ़ बनाने में सामयिक कहानीकारों का योगदान स्तुत्य है। यह विशेष ध्यातव्य है कि हिन्दी की स्त्रीवादी महिला लेखिकाएं ही नहीं, प्रबुद्ध पुरूष कहानीकारों ने भी नारी अस्मिता केलिए अपनी कहानियों के द्वारा आवाज़ उठायी है।

मनुष्य स्वभाव से देवतुल्य है। मतलब है कि उसका अंतर्मन निर्मल एवं विशुद्ध है और वह नारी के प्रति घृणा की कोई भावना नहीं रखता। लेकिन ज़माने के छल-प्रपंच से प्रभावित होने पर मनुष्य का यह देवत्व नष्ट हो जाता है और वह विवेकशून्य मनुष्य या पशु बन जाता है। पुरूष का नारी के प्रति विद्वेष एवं अत्याचार का सिलसिला यहां से आरंभ हो जाता है। इसप्रकार नष्ट हो जानेवाले देवत्व को पुनः प्रतिष्ठित कर मनुष्य के मन में फिर देवत्व की स्थापना करने का महान कार्य करनेवाली साहित्यिक विधा है कहानी। भारतीय नारी की अस्मिता की स्थापना केलिए सत्तरोत्तर हिन्दी कहानियों का योगदान महत्वपूर्ण है।

सामाजिक परिवर्तन केलिए सशक्त औजार के रूप में कहानियों का उपयोग आजकल किया जाता है। लेकिन इसकी एक कमज़ोरी यह है कि केवल पढ़े-लिखे लोग ही कहानियों का अध्ययन कर सकते हैं। इसलिए इस दिशा में लोकप्रिय कलारूप सिनेमा उल्लेखनीय कार्य कर सकता है। मतलब है कि अपढ़ व्यक्ति भी सिनेमा का आस्वादन कर सकता है, इसलिए सामान्य जनता को प्रभावित कर नारी अस्मिता केलिए सिनेमा बड़ा योगदान दे सकता है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में लाखों-करोड़ों लोगों के मन को उत्साह और उमंग से भरने में तत्कालीन साहित्यकारों का, विशेषकर कवियों का योगदान चिरस्मरणीय है। 'सारे जहॉ से अच्छा...आदि देशभक्ति गीतों से जन-जन की नाड़ियों को त्रसित कर राष्ट्रीयता की भावना जगाने में तत्कालीन कविगण कामयाब हो गये थे। उसी प्रकार नारी के नवजागरण एवं

तदर्थ संघर्ष के इस युग में सामयिक कहानीकार महत्वपूर्ण भूमिकाा निभा रहे हैं। यह बिलकुल हर्ष की बात है कि प्रबुद्ध कहानीकारों के इन प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव पर्याप्त मात्रा में दीख पड़ता है।

कहानीकारों के सख्त प्रयासों के बावजूद भारतीय नारी की मुक्ति, सामाजिक पहचान एवं अस्मिता की स्थापना पूरी तौर पर नहीं हो पाया है। इसकेलिए कुछ और समय लगेगा। इसका मुख्य कारण यह है कि सहस्राब्दियों से चली आ रही एक मजबूत परंपरा को एकदम तोड़ पाना आसान कार्य नहीं है। आज की नारी घेर संघर्ष कर रही है। समाज में अपनी पहचान एवं अस्मिता को हासिल करने केलिए। दरअसल नारी एक संक्रमण काल से गुज़र रही है। परंपराओं को तोड़ने का प्रयास एक ओर और नवीन रीति-रिवाज़ों को अपनाने की अकुलाहट दूसरी और। इस स्थिति में नारी बीच-बीच में सही दिशा पाने केलिए छटपटा रही है। वुस्तः यह छटपटाहट शुभलक्षण है, क्योंकि यह नारी की जीवंतता और अस्मिता की स्थापना का सूचक है।

संक्रमण काल से गुज़रती नारी को बहकाकर उसको पथभ्रष्ट करने केलिए कई ताकतें आज जानबूझकर कार्य कर रही हैं। नारी की उभरती अस्मिता को कुचलकर नारी को पहले की तरह अपनी दासी बनाये रखने केलिए कई चालाक पुरूष विविध प्रकार की जालें बिछा रहे हैं। भौगोलीकरण के इस युग में साम्राज्यवादी ताकतें नारी की देह को बिकाऊ बनाकर उसका शोषण करने केलिए तुली हैं। इसलिए वर्तमान युग में नारी को अधिक सतर्क होना चाहिए। अस्मिता की लड़ाई लड़नेवाली नारी को सही रास्ते पर अग्रसर होना है। इस नाजुक स्थिति में प्रबुद्ध कहानीकार नारी का पथप्रदर्शन कर सकते हैं। इसलिए कहना पड़ता है कि सामयिक कहानीकारों के कंधों पर दुगुना दायित्व आ पड़ता है।

भारतीय नारी की अस्मिता की लड़ाई ज़ोरों पर चल रही है। घर-परिवार में, समाज में, कर्म क्षेत्र में, अस्मिता एवं पहचान केलिए यह लगातार संघर्ष कर रही है। इस संघर्ष में उसकी सहायता करने केलिए सरकार की ओर से कई कदम उठा रहे हैं। संसद में तथा राज्य विधान सभाओं में नारियों केलिए तैंतीस प्रतिशत सीटों का आरक्षण करने की कारवाईयॉ चल रही हैं। लेकिन कई वर्षों के प्रयासों के बावजूद नारी आरक्षण विधेयक को पारित करना संभव नहीं हो

पाया है। पुरूष-प्रधान राजनीतिक दलों की दोहरी नीति का परिणाम है यह दुरवस्था, ऐसा कहना पड़ता है।

भारतीय नारी की अस्मिता की लड़ाई एक दुरभिसंधि से अग्रसर हो रही है। इस लड़ाई में देश की लाखों नारियां हिस्सा ले रही हैं। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से आवश्यक समर्थन देते हुए कई नारीवादी संगठन सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। नारी के नैसर्गिक एवं सांविधिक अधिकारों केलिए ये संगठन ज़ोरदार अभियान चला रहे हैं। भारत की राष्ट्रपति के रूप में एक नारी का- श्रीमती. प्रतिभा पाटील-का चुनाव समूची नारियों केलिए उत्साहवर्द्धक कार्य है। नारी की अस्मिता एवं पहचान को प्राप्त एक बहूत बड़ी सामाजिक स्वीकृति के रूप में इसकी व्याख्या होती है। कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करते हुए नारी को अपनी सफर जारी रखना है।

भारतीय नारी की अस्मिता केलिए हिन्दी का कहानी साहित्य बहूत बड़ा योगदान दे चुका है और दे रहा है। भविष्य में भी यह अपना अमूल्य येगदान देता रहेगा, ऐसा विश्वास है। नारी की अस्मिता केलिए थोड़ा-सा सकारात्मक धक्का देने में यह शोध-प्रबन्ध सहायक हुआ है तो मैं अपने को धन्य समझूँगी।